2 बुद्धिमान खरगोश

किसी वन में भासुरक नाम का एक सिंह रहता था। वह प्रतिदिन अनेक वन्य जीवों को मारा करता था। वन के सभी जीव–जंतु उससे परेशान थे। एक दिन जंगल के सभी जीव मिलकर उसके पास पहुँचे उससे निवेदन किया। वनराज! प्रतिदिन अनेक प्राणियों को मारने से क्या लाभ ? आपका आहार तो एक जीव से पूर्ण हो जाता है। अतः प्रतिदिन एक पशु आपके पास आ जाया करेगा। इस प्रकार बिना परिश्रम के आपका

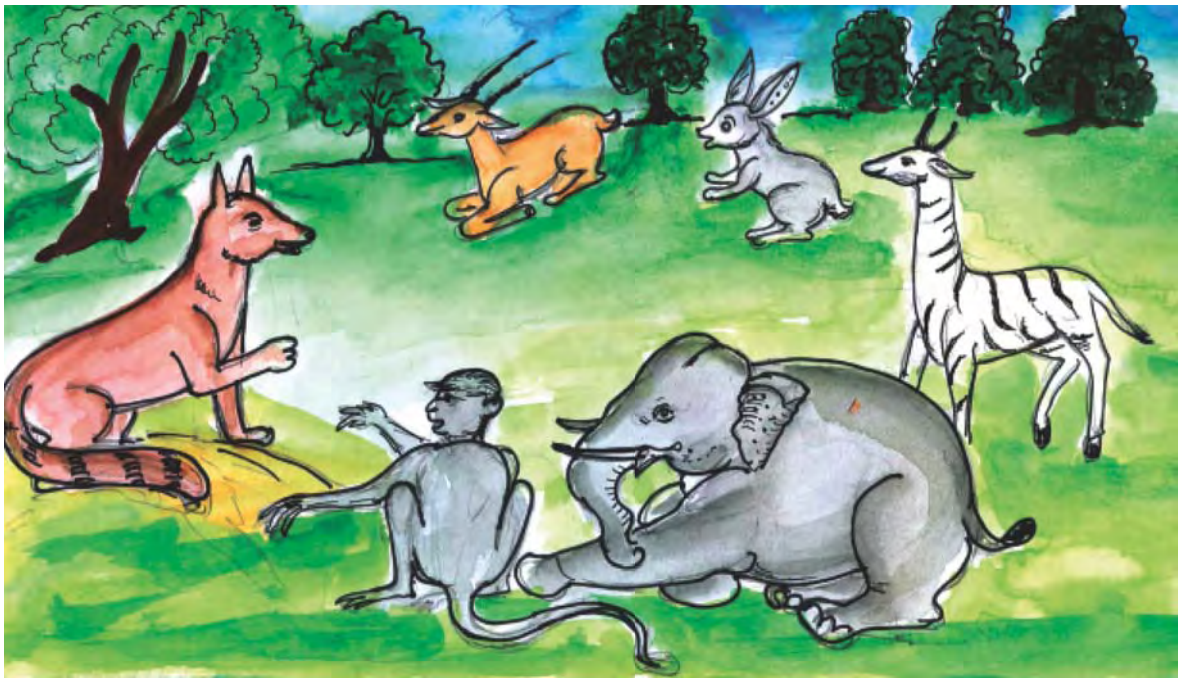

जीवन निर्वाह होता रहेगा और हम लोगों का सामूहिक विनाश भी नहीं होगा, क्योंकि प्रजा पर कृपा रखने वाला राजा निरंतर वृद्धि को प्राप्त करता है। सिंह उनकी बात मान गया। तब से वन्य प्राणी निर्भय होकर रहने लगे। इसी क्रम में कुछ दिनों बाद एक खरगोश की बारी आ गई। खरगोश सिंह की गुफा की ओर चल पड़ा, किंतु मृत्यु के भय से उसके पैर नहीं उठ रहे थे। मौत की घड़ियों को कुछ देर तक टालने के लिए वह जंगल में इधर–उधर भटकता रहा। एक स्थान पर उसे एक कुआँ दिखाई दिया। उसे देखकर उसके मन में एक विचार आया कि क्यों न भासुरक को उसके वन में दूसरे सिंह

के नाम से उसकी परछाई दिखाकर इस कुएँ में गिरा दिया जाए। यही उपाय सोचता–सोचता वह भासुरक सिंह के पास बहुत देर बाद पहुँचा। सिंह उस समय भूख–प्यास से व्याकुल होता हुआ अपने होंठ चाट रहा था। उसके भोजन की घड़ियाँ बीत रही थीं। सोच ही रहा था कि कुछ ही देर में कोई पशु न आया तो वह अपने शिकार को चल पड़ेगा और पशुओं के खून से सारे जंगल को सींच देगा। उसी समय वह खरगोश उसके पास पहुँच गया और उसको प्रणाम करके बैठ गया।

खरगोश को देखकर सिंह ने क्रोध से लाल–लाल आँखें करके गरजकर कहा – ''अरे खरगोश! एक तो तू छोटा है और फिर इतनी देर लगाकर आया है। आज तुझे मारकर कल से मैं जंगल के सारे पशुओं की जान ले लूँगा। उनके वंश का नाश कर डालूँगा।'' खरगोश ने विनयपूर्वक सिर झुकाकर उत्तर दिया– क्षमा करें स्वामी! आप व्यर्थ क्रोध कर रहे हैं। इसमें न मेरा अपराध है और न अन्य पशुओं का। कुछ फैसला करने से पहले मेरे देरी से आने के कारण को तो सुन लीजिए। शेर गुर्राया – ''जो बोलना है, जल्दी बोल। मैं बहुत भूखा हूँ। कहीं तेरे कुछ कहने से पहले ही मैं तुझे चबा न जाऊँ।''

स्वामी! बात यह है कि सभी पशुओं ने आज सभा करके और यह सोचकर कि मैं बहुत छोटा हूँ , मुझे तथा अन्य चार खरगोशों को आपके पास भोजन के लिए भेजा था। हम पाँच आपके पास आ रहे थे कि मार्ग में दूसरा सिंह अपनी गुफा से निकलकर आया और बोला – ''अरे! किधर जा रहे हो तुम सब ? अपने देवता को याद कर लो। मैं तुम्हें खाने आया हूँ।''

मैंने उससे कहा – ''हम सब अपने स्वामी भासुरक सिंह के पास आहार के लिए जा रहे हैं।''

तब वह बोला – ''भासुरक कौन है ? क्या उसे ज्ञात नहीं कि यह जंगल तो मेरा है ? मैं ही तुम्हारा राजा हूँ। तुम्हें जो बात कहनी हो, मुझसे कहो। भासुरक चोर है। तुम में से चार खरगोश यहीं रह जाएँ, एक खरगोश भासुरक के पास जाकर उसे बुला लाए, मैं स्वयं निबट लूँगा। हममें से जो बलशाली होगा, वही इस जंगल का राजा होगा।''

''मैं तो किसी तरह से उससे जान छुड़ाकर आपके पास आया हूँ , महाराज! इसलिए मुझे देरी हो गई। आगे स्वामी की जो इच्छा हो, करें।''

यह सुनकर भासुरक बोला – '' ऐसा ही है तो जल्दी से मुझे उस दूसरे सिंह के पास ले चलो। आज मैं उसका रक्त पीकर ही अपनी भूख मिटाऊँगा। इस वन में मेरे अतिरिक्त अन्य किसी सिंह का हस्तक्षेप मुझे मंजूर नहीं।''

खरगोश ने कहा – ''हे स्वामी! यह तो सत्य है कि अपने स्वाभिमान के लिए युद्ध करना आप जैसे शूरवीरों का धर्म है, किंतु दूसरा सिंह अपने दुर्ग में बैठा है। दुर्ग से बाहर आकर उसने हमारा रास्ता रोका था। दुर्ग में रहने वाले शत्रु पर विजय पाना कठिन है। दुर्ग में बैठा हुआ शत्रु सौ शत्रुओं के बराबर माना जाता है। दुर्गहीन राजा, दंतहीन साँप और मदहीन हाथी की तरह कमजोर हो जाता है।''

उसके प्रत्युत्तर में भासुरक बोला – ''तेरी बात ठीक है, किंतु मैं उस दुर्ग में बैठे सिंह को भी मार डालूँगा। शत्रु को जितनी जल्दी हो सके नष्ट कर देना चाहिए। मुझे अपने बल पर पूरा भरोसा है। शीघ्र ही उसका नाश न किया तो, बाद में वह असाध्य रोग की तरह ताकतवर हो जायेगा।''

खरगोश ने कहा – '' ठीक है, यदि स्वामी का यही निर्णय है तो आप मेरे साथ चलिए।'' यह कहकर खरगोश भासुरक को उसी कुएँ के पास ले गया, जहाँ झुककर उसने अपनी परछाई देखी थी। वहाँ पहुँचकर वह बोला – ''स्वामी मैंने जो कहा था, वही हुआ। आपको आता देखकर वह अपने दुर्ग में छिप गया है। आइए, मैं आपको उसकी सूरत दिखा दूँ।'' ''जरूर! मैं उस नीच को देखकर उसके दुर्ग में जाकर ही उससे लड़ूँगा।''

खरगोश भासुरक सिंह को कुएँ की मेड़ पर ले गया। भासुरक ने झुककर देखा तो उसे अपनी ही परछाई दिखाई

दी। उसने समझा, यही दूसरा सिंह है। तब वह जोर से गरजा। उसकी गरज के उत्तर में कुएँ से दुगुनी गूँज सुनाई दी। उस गूँज को दूसरे सिंह की गरज समझकर भासुरक उसी क्षण कुएँ में कूद पड़ा और वहीं जल में डूबकर मर गया। खरगोश ने अपनी बुद्धिमत्ता से सिंह को हरा दिया। वहाँ से लौटकर वह वन्य जीवों की सभा में गया। उसकी चतुराई जानकर और सिंह की मौत का समाचार सुनकर सभी जानवर प्रसन्नता से नाच उठे।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

प्रतिदिन – रोजाना
आहार – भोजन
परिश्रम – मेहनत
निरंतर – लगातार
निर्भय – बिना भय के
व्याकुल – बेचैन
व्यर्थ – बेकार
बलशाली – ताकतवर
नष्ट – बर्बाद
असाध्य – जो साधने के योग्य नहीं, कठिन

उच्चारण के लिए

परिश्रम, निर्भय, व्यर्थ, असाध्य, शीघ्र, बुद्धिमत्ता, प्रत्युत्तर, व्याकुल

सोचें और बताएँ

1. वन में रहने वाले सिंह का नाम क्या था ?
2. मृत्यु के भय से किसके पैर नहीं उठ रहे थे ?
3. खरगोश ने अपनी बुद्धिमत्ता से किसको मारा था ?

लिखें

1. सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखें

(क) जंगल के सभी जीव मिलकर किसके पास पहुँचे ?

(अ) सिंह (ब) खरगोश

(स) हिरण (द) भालू ( )

(ख) भासुरक ने कुएँ में क्या देखा –

(अ) खरगोश (ब) दूसरा सिंह

(स) अपनी परछाईं (द) पानी ( )

2. खरगोश ने प्राणों की रक्षा के लिए क्या किया ?
3. खरगोश को देरी से आता देख सिंह ने क्या किया ?
4. खरगोश ने देरी से आने का क्या कारण बताया ?
5. खरगोश ने सिंह को कैसे मारा ?

किसने, किससे, कब कहा ?

6. ''आज तुझे मारकर कल से मैं जंगल के सारे पशुओं की जान ले लूँगा।''
7. ''ठीक है, यदि स्वामी का यही निर्णय है तो आप मेरे साथ चलिए।''

भाषा की बात

- पाठ में 'प्रतिदिन' शब्द आया है। यहाँ 'दिन' शब्द में प्रति जुड़ने से प्रतिदिन बना है। प्रति शब्द जोड़कर ऐसे ही पाँच शब्द बनाएँ।
- पाठ में ऐसे वाक्यों को छाँटकर लिखिए, जिनमें क्रिया/सर्वनाम आया है, जैसेः–

क्रं.सं.	वाक्य	क्रिया शब्द	सर्वनाम
1.	वह प्रतिदिन अनेक वन्य जीवों को मारा करता था।	मारा करता था	वह
2.			
3.			

- पाठ में परिश्रम, क्षण ,शत्रु ,ज्ञात जैसे शब्द आए है। इनमें श्र, क्ष ,त्र, ज्ञ आदि वर्णों का प्रयोग हुआ है। ये सभी वर्ण संयुक्ताक्षर कहलाते हैं। ऐसे शब्द पाठ में से चुनकर लिखिए जिनमें इन वर्णों का प्रयोग हुआ हो।

यह भी करें

- आपने कई जानवरों को देखा होगा। आप जानवरों की सूची बनाइये तथा अपने से बड़ों से चर्चा कर पालतू और जंगली जानवर अलग–अलग छाँटकर लिखिए।

- कहानी को मौखिक याद कर अपने सहपाठियों को सुनाएँ।
  कहानी पर नाटक का मंचन करने के लिए मुखौटों की जरूरत होगी। जैसे– शेर का मुखौटा। और कौन–कौन से मुखौटों की जरूरत है ? उनके नाम लिखकर चित्र बनाएँ।

मुखौटे का नाम	चित्र

थोड़ा पढ़ना, ज्यादा सोचना, कम बोलना, ज्यादा सुनना, यही बुद्धिमान बनने के उपाय है।

–रवींद्रनाथ टैगोर